पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 16.03.2018 इस अंक

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

युवा उ

य नव वर्ष
विक्रमी सम्वत् 2075
एवम्
144वें आर्य समाज स्थापना दिवस
(18.3.2018)
पर हार्दिक शुभकानायें

वर्ष-34 अंक-20 चैत्र-2075 दयानन्दाब्द 194 16 मार्च से 31 मार्च 2018 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.03.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

स्वामी इन्द्रवेश जी के 81वें जन्मोत्सव पर रोहतक के टिटौली में चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

स्वामी जी प्रखर संगठनकर्ता व जन–जन के प्रिय नेता रहे –स्वामी आर्यवेश

मिलनसार व्यक्तित्व के धनी युवाओं के लिये सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे –डा. अनिल आर्य

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उतर प्रदेश) का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश, डा. अनिल आर्य, प्रो. श्योताजसिंह, राजेश्वर मुनि, स्वामी नित्यानन्द आदि व द्वितीय चित्र–डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए।

रविवार, 11 मार्च 2018, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ के तत्वावधान में पूर्व सांसद व आर्य संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के 81 वें जन्मोत्सव पर ग्राम टिटौली,रोहतक (हरियाणा) में 26 फरवरी से 11 मार्च 2018 तक स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने पधार कर यज्ञ में अपनी आहूति चढ़ाई व सामाजिक कुरीतियों व पाखण्ड–अन्धविश्वास के विरूद्व संघर्ष व नारी सुरक्षा के लिये कुछ कर गुजरने का संकल्प लिया।

पूर्णाहूति व समापन समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्य वेश ने कहा कि आज के सन्दर्भ में हमें स्वामी इन्द्रवेश जी बहुत याद आते हैं, जो एक कुशल संगठनकर्ता थे और उन्होंने जीवन भर अन्याय के विरूद्व क्रांति का शंखनाद किया। ग्रामीण अंचलों से लेकर देश भर में शीर्ष पर उन्होंने अपनी कार्यशैली से पहचान बनायी। उन्होंने ही सबसे पहले बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं के नारे को जन्म दिया तब किसी न यह सोचा भी न था।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि जब से स्वामी जी ने संन्यास की दीक्षा ली तभी से ही उन्हें निकट से देखने और समझने का अवसर मिला, वह अत्यन्त मिलनसार, युवकों के प्रिय नेता रहे। उनके नेतृत्व में किसानों, मजदूरों, अध्यापकों ने कई आन्दोलन लड़े, स्वामी जी ने अपनी कार्यशैली से आर्य समाज को एक आन्दोलन का रूप दिया आज हमें फिर से आर्य समाज को आम जन से जोड़ते हुए जन जन का आन्दोलन उनकी आवाज बनाने का संकल्प लेना होगा व युवाओं को आर्य समाज के साथ सम्मान पूर्वक जोड़ना होगा। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.दीक्षेन्द्र आर्य ने किया व बहिन प्रवेश आर्या व पूनम आर्या ने सारी व्यवस्था कुशलता पूर्वक सम्भाली। इस अवसर पर सांसद शादीराम बतरा, बलराज कुण्डु, डा. बलबीर आचार्य, डा.रवि प्रकाश, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, ब्र.रामस्वरूप, राजेश्वर मुनि, विरजानन्द एडवोकेट, प्रो.श्योताजसिंह आदि ने अपने विचार रखे व स्वामी इन्द्रवेश जी के कार्यो को स्मरण कर अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की।

दिल्ली से पधारे परिषद् के अधिकारी डा.अनिल आर्य,प्रवीन आर्या,विश्वनाथ आर्य,महेन्द्र भाई,रामकुमारसिंह,अरूण आर्य आदि का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी। द्वितीय चित्र में हरियाणा के कौन कौने से पधारे श्रद्धालु आर्य जन।

दानी महानुभावों से अपील:–

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस. कोड-**SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

— डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

शूरता की मिसाल पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर

(6 मार्च को पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस के अवसर)

डॉ विवेक आर्य

पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। आपके पूर्वज महाराजा रंजित सिंह की फौज में थे इसलिए वीरता आपको विरासत में मिली थी। बचपन से ही आप स्वाभिमानी और दृढ विचारो के थे। एक बार आपको पाठशाला में प्यास लगी। मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहाँ। आपने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पढने का आपको बहुत शोक था। मुंशी कन्हयालाल अलाख्धारी की पुस्तकों से आपको स्वामी दयानंद जी का पता चला। अब लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथो का स्वाध्याय आरंभ कर दिया। पेशावर से चलकर अजमेर स्वामी दयानंद के दर्शनों के लिए पंडित जी पहुँच गए। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने पंडित जी से एक प्रश्न किया था की आकाश भी व्यापक हैं और ब्रह्मा भी, दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं ? पंडित जी से उसका उत्तर नहीं बन पाया था। पंडित जी ने स्वामी दयानंद से वही प्रश्न पुछा। स्वामी जी ने एक पत्थर उठाकर कहा की इसमें अग्नि व्यापक हैं या नहीं? मैंने कहाँ की व्यापक हैं, फिर कहाँ की क्या मिटटी व्यापक हैं? मैंने कहाँ की व्यापक हैं, फिर कहाँ की क्या जल व्यापक हैं? मैंने कहाँ की व्यापक हैं। फिर कहाँ की क्या आकाश और वायु ? मैंने कहाँ की व्यापक हैं, फिर कहाँ की क्या परमात्मा व्यापक हैं? मैंने कहाँ की व्यापक हैं। फिर स्वामी जी बोले कहाँ की देखो। कितनी चीजें हैं परन्तु सभी इसमें व्यापक हैं। वास्तव में बात यहीं हैं की जो जिससे सूक्ष्म होती हैं वह उसमे व्यापक हो जाती हैं। ब्रह्मा चूँकि सबसे अति सूक्षम हैं इसलिए वह सर्वव्यापक हैं। यह उत्तर सुन कर पंडित जी की जिज्ञासा शांत हो गयी। आगे पंडित जी ने पुछा जीव ब्रह्मा की भिन्नता में कोई वेद प्रमाण बताएँ। स्वामी जी ने कहाँ यजुर्वेद का ४० वां अध्याय सारा जीव ब्रह्मा का भेद बतलाता हैं। इस प्रकार अपनी शंकाओ का समाधान कर पंडित जी वापस आकार वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लग गए।

शुद्धि के रण में:—कोट छुट्टा डेरा गाजी खान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवक मुस्लमान बनने जा रहे थे। पंडित जी के व्याखान सुनने पर ऐसा रंग चड़ा की आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दी। इनके नाम थे महाशय चोखानंद, श्री छबीलदास व महाशय खूबचंद जी, जब तीनो आर्य बन गए तो हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। कुछ समय के बाद महाशय छबीलदास की माता का देहांत हो गया। उनकी अर्थी को उठाने वाले केवल ये तीन ही थे। महाशय खूबचंद की माता उन्हें वापस ले गयी। आप कमरे का ताला तोड़ कर वापिस संस्कार में आ मिले। तीनो युवको ने वैदिक संस्कार से दाह कर्म किया। पौराणिको ने एक चल चली यह प्रसिद्ध कर दिया की आर्यो ने माता के शव को भुन कर खा लिया हैं। यह तीनो युवक मुसलमान बन जाये तो हिन्दुओं को कोई फरक नहीं पड़ता था परन्तु पंडित लेखराम की कृपा से वैदिक धर्मी बन गए तो दुश्मन बन गए। इस प्रकार की मानसिकता के कारण तो हिन्दू आज भी गुलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

जम्मू के श्री ठाकुरदास मुस्लमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया।

१८८१ में हैदराबाद सिंध के श्रीमंत सूर्यमल की संतान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पंडित पूर्णानंद जी को लेकर आप हैदराबाद पहुंचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थे। पर आप कहाँ मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया की मौल्वियो से उनका शास्त्राथ करवा दे। मौलवी सय्यद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर कर दिया। उसके बाद चार और मौल्वियो से पत्रों से विचार किया। आपने उनके सम्मूख मुस्लमान मौल्वियो को हराकर उनकी धर्म रक्षा की।

वही सिंध में पंडित जी को पता चला की कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहा पहुच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला। एक पुस्तक आदम और इव पर लिख कर बांटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए।

गंगोह जिला सहारनपुर की आर्यसमाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने १८८५ में करी थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुस्लमान बन गए थे। आर्य समाज ने १८८४ में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया। आर्य समाज के विरुद्ध गंगोह में तूफान ही आ गया। श्री रेह्तूलाल जी भी आर्यसमाज के सदस्य थे। उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मन किया पर वे नहीं माने। पिता ने बिरादरी का साथ दिया। उनकी पुत्र से बातचीत बंद हो गयी। पर रेह्तुलाल जी कहाँ मानने वाले थे उनका कहना था गृह त्याग कर सकता हु पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता हूँ। इस प्रकार पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था की उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धांत की रक्षा हेतु भावना कूट–कूट कर भरी थी।

घासीपुर जिला मुज्जफरनगर में कुछ चौधरी मुस्लमान बनने जा रहे थे। पंडित जी वह एक तय की गयी तिथि को पहुँच गए। उनकी दाड़ी बढ़ी हुई थी और साथ में मुछे भी थी। एक मौलाना ने उन्हें मुस्लमान समझा और पूछा क्यों जी यह दाढ़ी तो ठीक हैं पर इन मुछो का क्या राज हैं। पंडित जी बोले दाढ़ी तो बकरे की होती हैं मुछे तो शेर की होती हैं। मौलाना समाज गया की यह व्यक्ति मुस्लमान नहीं हैं। तब पंडित जी ने अपना परिचय देकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सभी मौलानाओ को परास्त करने के बाद पंडित जी ने वैदिक धर्म पर भाषण देकर सभी चौधरियो को मुस्लमान बन्ने से बचा लिया।

१८९६ की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगी। पंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार हैं। तभी उन्हें पता चला की मुस्तफाबाद में पांच हिन्दू मुस्लमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो घंटे में वापिस आ गए और मुस्तफाबाद के लिए निकल गए। अपने कहाँ की मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पांच पुत्र अधिक प्यारे हैं। पीछे से आपका सवा साल का इकलोता पुत्र चल बसा। पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकार वेद प्रचार के लिए वजीराबाद चले गए।

पंडित जी की तर्क शक्ति गजब थी। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया की हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुस्लमान कैसे हो गए। अपने सात कारण बताये। १. मुस्लमान आक्रमण में बलातपूर्वक मुसलमान बनाया गया २. मुसलमानी राज में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओ को मुस्लमान बनाया गया ३. इस्लामी कल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति के कारण बने ४. हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू औरतो ने मुस्लमान के घर की शोभा बढाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुस्लमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकल कर मुस्लमान बना दिया गया। ५. मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने ६. मुसलमानी वेशयायो ने कई हिन्दुओं को फंसा कर मुस्लमान बना दिया ७. वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुस्लमान बने।

अगर गहराई से सोचा जाये तो पंडित जी ने हिन्दुओं को जाति रक्षा के लिए उपाय बता दिए हैं, अगर अब भी नहीं सुधरे तो हिन्दू कब सुधरेंगे।

पंडित जी और गुलाम मिर्जा अहमद:—पंडित जी के काल में कादियान , जिला गुरुदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने करी थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर मानते हैं, मिर्जा ने अपने आपको कभी कृष्ण, कभी नानक, कभी ईसा मसीह कभी इस्लाम का आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने नवीन मत को चलने के लिए नई नई भविष्यवानिया और इल्हामो का ढोल पीटने लगा।

एक उदहारण मिर्जा द्वारा लिखित पुस्तक "वही हमारा कृष्ण " से लेते हैं इस पुस्तक में लिखा हैं दृ उसने (ईश्वर ने) हिन्दुओं की उन्नति और सुधर के लिए निश्कलंकी अवतार को भेज दिया हैं जो ठीक उस युग में आया हैं जिस युग की कृष्ण जी ने पाहिले से सुचना दे रखी हैं। उस निष्कलंक अवतार का नाम मिर्जा गुलाम अहमद हैं जो कादियान जिला गुरुदासपुर में प्रकट हुए हैं। खुदा ने उनके हाथ पर सहस्त्रो निशान दिखये हैं। जो लोग उन पर इमान लेट हैं उनको खुदा ताला बड़ा नूर बख्शता हैं। उनकी प्रार्थनाए सुनता हैं और उनकी सिफारिश पर लोगो के कास्ट दूर करता हैं। प्रतिष्ठा देता हैं। आपको चाहिए की उनकी शिक्षाओ को पढ़ कर नूर प्राप्त करे। यदि कोई संदेह हो तो परमात्मा से प्रार्थना करे की हे परमेश्वर? यदि यह व्यक्ति जो तेरी और से होने की घोषणा करता हैं और अपने आपको निष्कलंक अवतार कहता हैं। अपनी घोषणा में सच्चा हैं तो उसके मानने की हमे शक्ति प्रदान कर और हमारे मन को इस पर इमान लेन को खोल दे। पुन आप देखेंगे की परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष निशानों से उसकी सत्यता पर निश्चय दिलवाएगा। तो आप सत्य ह्रदय से मेरी और प्रेरित हो और अपनी कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करावे अल्लाह ताला आपकी कठिनाइयों को दूर करेगा और मुराद पूरी करेगा। अल्लाह आपके साथ हो। पृष्ठ ६,७।८ वही हमारा कृष्ण।

पाठकगन स्वयं समझ गए होंगे की किस प्रकार मिर्जा अपनी कुटिल नीतिओ से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्ठा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली।

पंडित जी सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए मिर्जा के आगे तीन प्रश्न रखे।

१. पहले मिर्जा जी अपने इल्हामी खुदा से धारावाही संस्कृत बोलना सीख कर आर्यसमाज के दो सुयोग्य विद्वानों पंडित देवदत शास्त्री व पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे।

६ दर्शनों में से सिर्फ तीन के आर्ष भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा जी अपने खुदा से मंगवा ले तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा।

३. मुझे २० वर्ष से बवासीर का रोग हैं । यदि तीन मास में मिर्जा अपनी प्रार्थना शक्ति से उन्हें ठीक कर दे तो में मिर्जा के पक्ष को स्वीकार कर लूँगा।

पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा। तंग आकर मिर्जा ने लिखा की यहीं कादियान आकार क्यों नहीं चमत्कार देख लेते। सोचा था की न पंडित जी का कादियान आना होगा और बला भी टल जाएगी।पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर कादियान पहुँच गए। दो मास तक पंडित जी कदियन में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका।

इस खीज से आर्यसमाज और पंडित लेखराम को अपना कट्टर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध दुष्प्रचार आरंभ कर दिया।

मिर्जा ने ब्राहिने अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांग कर छपवाई। पंडित जी ने उसका उत्तर तकजीब ब्राहिने अहमदिया लिखकर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यो की आंख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाये खब्ते अहमदिया (अहमदी खब्त का ईलाज) लिख कर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी की एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी। मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित इस बात के ११ वर्ष बाद तक जीवित रहे।

पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुस्लमान होने से बच गए। उनका हिन्दू जाती पर सदा उपकार रहेगा।

पंडित जी का अमर बलिदान:— मार्च १८९७ में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया। उसका कहना था की वो पहले हिन्दू था बाद में मुस्लमान हो गया अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहता हैं। वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वही भोजन करने लगा। ६ मार्च १८९७ को पंडित जी घर स्वामी दयानंद के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थे । तभी उन्होंने एक अंगराई ली की उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मर दिया और भाग गया। पंडित जी को हस्पताल लेकर जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए। पंडित जी को अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो वैदिक धर्म की। उनका आखिरी सन्देश भी यही थे की "तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए " ।पंडित जी का जीवन आज के हिन्दू युवको के लिए प्रेरणा दायक हैं की कभी विधर्मियो से डरे नहीं और जो निशक्त हैं उनका सदा साथ देवे।

यज्ञ एवं योग मनुष्य जीवन के आवश्यक कर्त्तव्य होने सहित मोक्ष तक ले जाने में सहायक हैं

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

महर्षि दयानन्द जी ने वेदानुयायी आर्यों के पांच नित्यकर्म बताते हुए उसमें प्रथम व द्वितीय स्थान पर सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र को स्थान दिया है। प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति में द्विजों को पंचमहायज्ञों करने की अनिवार्यता का उल्लेख मिलता है। देवयज्ञ अग्निहोत्र अनेक यज्ञों में से एक है जो प्रतिदिन किया जाने वाला कर्तव्य है। यज्ञ को अग्निहोत्र व हवन आदि नामों से जाना जाता है और इसकी विशेषता यह है कि यह अल्प समय साध्य है तथा इसे नित्य करने से इससे गृहस्थ एवं आसपास के लोगों को स्वास्थ्य आदि का लाभ होता है। यज्ञ से वायु एवं वृष्टि जल भी शुद्ध व पवित्र होता है। अग्निहोत्र में योग के आवश्यक अंग ईश्वर स्तुति, प्रार्थना व उपासना को भी स्थान दिया गया है। यद्यपि ऋषि दयानन्द जी ने दैनिक यज्ञ की जो विधि पंचमहायज्ञ विधि और संस्कारविधि पुस्तकों में दी हैं, वहां स्तुति–प्रार्थना–उपासना के आठ मंत्रों को स्थान नहीं दिया है तथापि आजकल जहां जो भी आर्य परिवार वा वैदिक धर्मी यज्ञ करता है, वह इन आठ मंत्रों का अवश्य ही उच्चारण व गान करते हैं। अधिकांश को इन मंत्रों के अर्थ भी ज्ञात होते हैं। ऋषि ने इन मंत्रों के हिन्दी अर्थ बोलने व सुनाने का निर्देश भी किया है। इन यज्ञों से ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना होने के साथ यज्ञ में जिन मंत्रों से आचमन, अग्न्याधान, समिधादान, पंचघृताहुति, जल सिचन आदि क्रियायें एवं अन्य आहुतियों सहित दैनिक यज्ञ के मंत्रों से आहुतियां दी जाती हैं उनसे भी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सम्पन्न होती है। इससे योग की अनिवार्य शर्त ईश्वर की निकटता व उसकी प्राप्ति में सहायता मिलती है। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर भक्ति अर्थात् ईश्वर की उपासना का फल बताते हुए कहा है कि इससे मनुष्य के गुण–कर्म–स्वभाव सुधरते हैं, ईश्वर की निकटता प्राप्त होती है और मनुष्य की आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि पहाड़ के समान दुःख प्राप्त होने पर भी घबराता नहीं है। हमारा यह भी अनुमान है कि शारीरिक दुःख व क्लेशों में जितना कष्ट नास्तिक व सही रीति से ईश्वरोपासना न करने वालों को अनुभव होता है, ईश्वर की उपासना करने वालों को उससे कम प्रतीत होना अनुभव होता है। इससे प्रतीत होता है कि ईश्वर की भक्ति करने से मनुष्य की दुःखों को सहन करने की शक्ति में वृद्धि होती है।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप को जानना और ईश्वर की भक्ति व उपासना कर उसे प्राप्त करना है। ईश्वर ने जीवात्माओं के सुख भोग व विवेक प्राप्ति के लिए ही यह समस्त संसार बनाया है। इस समस्त संसार को बनाकर ईश्वर ने जीवों के लिए पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल व अन्नादि अनेक उत्तमोत्तम पदार्थ बनाये हैं। परमात्मा ने जीवों के कर्म के अनुसार उन्हें मनुष्यादि शरीर सहित माता–पिता–भगिनी–बन्धु आदि अनेक संबंधी, परिवारजन व इष्ट–मित्र भी दिये हैं। परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिए सृष्टि की आदि में मनुष्यों को वेदों का ज्ञान भी दिया है जिससे इस सृष्टि के रहस्यों को जानने व समझने की योग्यता उत्पन्न होती है और साथ ही मनुष्य ईश्वर, जीव व प्रकृति को यथार्थ रूप में जान सकते हैं। इस कारण प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का ऋणी हैं। इस ऋण से उऋण होना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इसी के लिए वेद व ऋषियों ने सन्ध्या अर्थात् सम्यक ध्यान=योग का विधान किया है। इसमें ईश्वर का उसके द्वारा किये गये उपकारों के लिए धन्यवाद करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य होता है। समस्त सन्ध्या योगानुष्ठान ही है। सन्ध्या में आचमन मंत्र में ईश्वर में सन्ध्या का उद्देश्य मनोवांछित आनन्द अर्थात् ऐहिक सुख–समृद्धि और पूर्णानन्द अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति को बताया गया है। सन्ध्या की समाप्ति पर नमस्कार मंत्र से पूर्व समर्पण मन्त्र में भी ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की कामना व प्रार्थना है। हम जानते हैं कि हम ईश्वर से जो भी प्रार्थना करें, उसकी पूर्ति के लिए हमें उसके अनुकूल कर्म व प्रयत्न भी करने होते हैं। ऐसा करने पर ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं को पूरा करता है। अतः सन्ध्या करने से ईश्वर की निकटता व मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव में सुधार होने के साथ ईश्वर का सहाय प्राप्त होता है। सन्ध्या व योग का एक मुख्य अंग स्वाध्याय है। स्वाध्याय वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन, उसके चिन्तन व मनन सहित उसके अनुरूप आचरण को कहते हैं। स्वाध्याय से ईश्वर सहित अन्य विषयों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। स्वाध्याय भी एक प्रकार का योग व ईश्वर की उपासना ही है। ईश्वर का सत्य स्वरूप स्वाध्याय व वैदिक विद्वानों के उपदेश आदि से ही जाना जाता है। अतः स्वाध्याय भी हमें ईश्वर के निकट ले जाने व ईश्वर को जानने में सहायक होने से योग ही है। सन्ध्या को जान लेने व उसका नित्य प्रति सेवन करने के बाद ईश्वर के गुणों का निरन्तर ध्यान व धन्यवाद करना तथा स्वाध्याय किये गये विषयों के अनुरूप आचरण करना भी अनिवार्य रहता है। उसे करके हम निश्चय ही योग को सिद्ध कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द समाधि को सिद्ध किये हुए योगी थे। उन्होंने उसकी योग को सन्ध्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इससे यह भी अनुमान होता है कि समाधि सिद्ध योगी होकर भी ऋषि दयानन्द इसी विधि से सन्ध्या वा ईश्वर का ध्यान आदि करते थे। यदि इससे अधिक व अन्य कुछ करते तो उसे भी वह पुस्तक रूप में अवश्य लिखते। अतः सन्ध्या ही वास्तविक योग है। सन्ध्या करके हम निश्चय ही योग करते हैं व निरन्तर अभ्यास कर व उसे बढ़ाते हुए समाधि प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात्कार भी कर सकते हैं। हमारे जो सन्यासी और विद्वान हैं, वह सभी सन्ध्या के माध्यम से ही योग अर्थात् ईश्वर प्राप्ति के साधन व प्रयत्न करते हैं। सन्ध्या में भी यम, नियमों सहित योगासनों का अभ्यास, प्राणायाम आदि करना आवश्यक है।

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ में अग्निहोत्र सहित हमें परोपकार के सभी प्रकार के कर्म करने के साथ जीवन को सत्य व सादगी के अनुसार व्यतीत करना आवश्यक है। वेद ने सभी मनुष्यों के लिए भोगों का भोग त्याग पूर्वक करने की आज्ञा की है। दूसरों का दुःख दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना भी योगी के लिए आवश्यक है। योगेश्वर कृष्ण और ऋषि दयानन्द के जीवन में हमें यह दोनों महापुरुष समाज व देश के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए दिखाई देते हैं। हमारे सभी प्राचीन ऋषि योगी थे और वह वनों में रहकर यज्ञादि कर्म निरन्तर करते रहते थे। योगी के लिए यज्ञ व अग्निहोत्र का विधान तो श्रुति ग्रन्थों में है, यज्ञ के त्याग का विधान वैदिक शास्त्र में कहीं नहीं है। हमारा यह भी अनुमान है कि यज्ञ करते हुए मनुष्य यदि योगाभ्यास करता है तो वह इससे शीघ्र सफल मनोरथ हो सकता है। आर्यसमाज व वैदिक धर्म से इतर योगाभ्यासी भी योगाभ्यास करते हैं परन्तु बिना वेदों के स्वाध्याय और सन्ध्या–यज्ञानुष्ठान भलीप्रकार न करने से उन्हें योग में ईश्वर साक्षात्कार की सिद्धि यज्ञ करने वाले साधको की तुलना में किंचित विलम्ब से मिलती है, ऐसा अनुमान होता है। यज्ञ करने से मनुष्य के पास शुभ कर्मों की एक बड़ी पूंजी संग्रहीत हो जाती है। यज्ञ से जितने अधिक प्राणियों को शुद्ध प्राणवायु व वर्षाजल की शुद्धि से ओषिधियों की शुद्धि व उनके प्रभाव में वृद्धि होती है, उससे उस यज्ञानुष्ठान करने वाली योगी व उपासक की कर्म–पूंजी इतर सभी योगाभ्यासियों से अधिक होने के कारण उसे शीघ्र योग के लाभों की प्राप्ति का होना निश्चित होता है। यज्ञ व अग्निहोत्र ईश्वर आज्ञा भी है। अतः जो यज्ञ नहीं रकते वह ईश्वर की अवज्ञा करते हैं। यज्ञ योग, उपासना व ईश्वर की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक एवं उपयोगी है। सभी योगाभ्यासियों को यज्ञ पर विशेष ध्यान देना चाहिये और दैनिक यज्ञ तो अवश्य ही करने चाहिये, ऐसा हम अनुभव करते हैं।

यज्ञ वह अनुष्ठान वह प्रक्रिया है जिससे हम अपना वह सहस्रों लोगों को शुद्ध प्राण वायु व वर्षा जल सहित आरोग्य फैलाकर उन्हें लाभ पहुंचाते हैं। योगाभ्यास करके हम अपनी आत्मा को ही ईश्वर से मिलाने का प्रयत्न करते हैं। योग व यज्ञ दोनों के लक्ष्य में इस दृष्टि से समानता है कि दोनों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना होती है। विचार करने पर यह भी ज्ञात होता है कि यदि यज्ञ व योग दोनों का सहारा आध्यात्मिक व्यक्ति लेता है तो वह अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर सकता है। यदि व्यक्ति योगाभ्यास ही करे और यज्ञ की उपेक्षा करे तो उसे अपने लक्ष्य प्राप्ति में अधिक समय लग सकता है। गृहस्थ जीवन में यज्ञ करना एकाकी जीवन जीने वाले मनुष्य की तुलना में कुछ सरल लगता है। यज्ञ में अनेक परिवारजनों की सहायता प्राप्त होने से यज्ञ आसानी से होता है जबकि एकाकी जीवन जीनें वाले मनुष्य को यज्ञ करने में कुछ अधिक पुरुषार्थ करना पड़ता है। यज्ञ के साधन एकत्रित करने में भी उसे गृहस्थ व्यक्ति से अधिक पुरुषार्थ करना पड़ सकता है। महर्षि दयानन्द ने योग को सन्ध्या में ही सम्मिलित कर लिया है, ऐसा हम अनुभव करते हैं। महर्षि दयानन्द स्वयं एक उच्च कोटि के योगी थे। वह कई कई घण्टों की समाधियां लगाते थे। रात्रि जब सब सो जाते थे तब भी वह समाधि अवस्था में रहते थे। इससे अनुमान है कि उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार किया था। अतः उनका लिखा व कहा एक एक शब्द योग व यज्ञ विषय में प्रमाण है। इस आधार पर उनसे प्राप्त सन्ध्योपासना व यज्ञ की विधियां उनकी मनुष्यजाति को अनुपम देन हैं। यह सन्ध्या विधि व उनके वेदभाष्य का स्वाध्याय मनुष्य को योग में प्रवृत्त कर उसे समाधि तक ले जाते हैं। सन्ध्या में प्रार्थना करते हुए उपासक कहता है कि मुझे मोक्ष व अन्य धर्म, अर्थ व काम की प्राप्ति सद्यः अर्थात् आज ही हो। यह बात विशेष महत्व रखती है। यही योग का लक्ष्य भी है। यज्ञ में स्विष्टकृदाहुति में भी सभी कामनाओं को पूर्ण करने की प्रार्थना की गई है। यह महत्वपूर्ण है कि महर्षि दयानन्द ने योग को सर्वसामान्य के लिए सरल बनाया है। योगदर्शन का अध्ययन सन्ध्या करने वाले उपासक को लाभ पहुंचाता है। इससे योगाभ्यासी को साधना के अनेक पक्षों व उपायों का महत्व ज्ञात होता है। सन्ध्या को निरन्तर करने से मनुष्य समाधि की ओर अग्रसर होता है। ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी यही है। अतः यज्ञ एवं योग ईश्वर प्राप्ति के साधन हैं। दोनों परस्पर पूरक हैं और जीवन के अत्यावश्यक हैं। इन्हें करने से ही मनुष्य जीवन सार्थक व सफल होता है।

196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

व्यास आश्रम हरिद्वार का वार्षिकोत्सव

माता भाग्यवंती जी द्वारा स्थापित व्यास आश्रम, सप्तसरोवर, साधुबेला, हरिद्वार का 65 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 1 अप्रैल से 5 अप्रैल 2018 तक आयोजित किया जा रहा है। सामवेद पारायण यज्ञ प्रो.महावीर जी के व योग साधना शिविर डा.त्रिलोक चन्द जी के सान्निध्य में चलेगा। समापन समारोह 5 अप्रैल 2018 को प्रातः 7.30 बजे से दोपहर 1 बजे तक होगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

–गिरधारीलाल चन्दवानी, प्रधान–रमेशचन्द्र गुप्ता, उपाध्यक्ष व विमला गुप्ता, शान्ति गुप्ता, डा. अतुल मगन

राष्ट्र निर्माण पार्टी को आर्य समाज का समर्थन व आचार्य प्रेमपाल शास्त्री सम्मानित

शनिवार, 10 मार्च 2018, नई दिल्ली के गुरूकुल गौतम नगर में राष्ट्र निर्माण पार्टी की राष्ट्रीय चिंतन बैठक स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। ठाकुर विक्रम सिंह ने आह्वान किया कि यदि अपनी आर्य संस्कृति की रक्षा करना चाहते हो तो राष्ट्र निर्माण पार्टी को मजबूत बनाओ और जिन्हे चुनाव लड़ना है उनका स्वागत है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि पहले आर्य समाज को संगठित व मजबूत बनाओ फिर राजनीति में स्थान बन पायेगा। जब हमारा गुरू एक, यज्ञ एक, वेद एक फिर संगठन में भिन्नता क्यों यह समाज व राष्ट्र के हित में नहीं है। हमें पहले आर्य समाज के विभिन्न धड़ों को मतभेद भुलाकर एक करना होगा।

वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री धर्मपाल आर्य, डा. धर्मेन्द्र शास्त्री, डा. वीरपाल विद्यालंकार, गायत्री मीना, डा. बलबीर आचार्य, रविदेव गुप्ता, जितेन्द्र भाटिया, योगेश बत्रा, शिवकुमार मदान, पं. मेघश्याम वेदालंकार आदि ने भी अपने विचार रखे। श्री आनन्द कुमार (पूर्व आई.पी.एस) ने कुशल संचालन किया । द्वितीय चित्र–आर्य महासम्मेलन अशोक विहार, दिल्ली के मंच पर आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री का अभिनन्दन करते आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सन्तोष शास्त्री, प्रेमकुमार मितल, एडवोकेट व सुरेश आर्य (गाजियाबाद)।

शिक्षाविद् डा.अशोक कुमार चौहान व माता पुष्पा भाटिया के सान्निध्य में

दिल्ली में राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में "राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर" शनिवार, 9 जून से रविवार, 17 जून 2018 तक दयानन्द मॉडल स्कूल,विवेक विहार,पूर्वी दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है । कक्षा 6 से 12 वीं तक के युवक शिविर में भाग ले सकेंगे । इच्छुक युवक 200/–रु0 प्रवेश शुल्क के साथ अपना स्थान शीघ्र आरक्षित करवा लें,केवल 250 युवक पहले आओ पहले पाओ के आधार पर लिए जायेंगे । सभी शिविरार्थी शनिवार, 9 जून 2018 को दोपहर 12 बजे शिविर स्थल पर रिपोर्ट करेंगे ।

शिविर उद्घाटन समारोह शनिवार, 9 जून को सायं 5 बजे से रात्री 7 बजे तक होगा व शिविर समापन रविवार, 17 जून 2018 को सायं 5 बजे से रात्री 7.30 बजे तक होगा । सभी आर्य बन्धुओं से अपील है कि "उद्घाटन व समापन" के अवसर पर हजारों की संख्या में पंहुच कर युवा शक्ति को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। दानी महानुभावों से अपील है कि निरन्तर चलने वाले "ऋषि लंगर" के लिये आटा,दाल,चावल,सब्जी,चीनी,मसालें,दूध,रिफाईण्ड,घी आदि से सहयोग करने की कृपा करें । समस्त क्रास चैक/ड्राफट "केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें ।

सम्पर्क सूत्रः सौरभ गुप्ता–9971467978, अरूण आर्य–9818530543, शिवम मिश्रा–9958125334

निवेदक

आनन्द चौहान	**प्रवीन भाटिया**	**डा.अनिल आर्य**	**यशोवीर आर्य/रामकुमार आर्य**	**महेन्द्र भाई**
शिविर संरक्षक	स्वागताध्यक्ष	शिविर अध्यक्ष	सहसंयोजक	शिविर संयोजक

दिल्ली आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में "विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर" रविवार, 20 मई से रविवार, 27 मई 2018 तक गीता भारती पब्लिक स्कूल,अशोक विहार,फेज–2,दिल्ली–110052 में आयोजित किया जा रहा है। कक्षा 6 से 12 वीं तक की बालिकायें शिविर में भाग ले पायेगी। अतः इच्छुक बालिकायें शीघ्र स्थान आरक्षित करवा लें, सम्पर्क करें–सौरभ गुप्ता,प्रधान शिक्षक,9971467978 । कन्याओं की 8 दिन की भोजन व्यवस्था के लिये आप सभी दानी महानुभावों का सहयोग अपेक्षित है,कृपया राशन आटा,दाल,चावल,सब्जी,मसाले,रिफाईण्ड,देसी घी,दूध आदि से सहयोग करके पुण्य के भागी बने । निवेदक

राजरानी अग्रवाल	नीता खन्ना	उर्मिला आर्या	अर्चना पुष्करना
शिविर संरक्षक	प्रभारी	प्रदेश अध्यक्ष	प्रदेश महामंत्री

23 मार्च शहीद दिवस पर संगीत संध्या

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में शुक्रवार, 23 मार्च 2018 को सायं 4.30 बजे से रात्री 8 बजे तक आर्य समाज,सुभाष नगर,पश्चिमी दिल्ली में एक शाम शहीदों के नाम भव्य संगीत संध्या का आयोजन किया जा रहा है। श्री नरेन्द्र आर्य सुमन व अंकित उपाध्याय के मधुर गीत होंगे। सभी आर्य जन हजारों की संख्या में पंहुचे। समारोह के पश्चात ऋषि लंगर का आनन्द लें।

हरिद्वार में योग साधना शिविर

वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के पावन सान्निध्य में योग साधना शिविर दिनांक 28 मार्च से 1 अप्रैल 2018 तक वैदिक आनन्द धाम योग आश्रम, हरिपुर कलां, हरिद्वार में लगेगा। इच्छुक साधक सम्पर्क करें –शिवनारायण ग्रोवर, महामंत्री, फोनः 9813367867, 9711295710

राष्ट्रीय व्यायाम शिक्षक शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यायाम शिक्षक शिविर दिनांक 13,14,15 अप्रैल 2018 को गुरूकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली में श्री सूर्यदेव आर्य (जीन्द) के नेतृत्व में आयोजित किया जा रहा है। सभी शिक्षक वीरवार, 12 अप्रैल को सायं 5 बजे तक पंहुच जाये व शिविर समापन समारोह रविवार, 15 अप्रैल 2018 को दोपहर 3 से 5 बजे तक होगा। –सौरभ गुप्ता, संयोजक

गुरूकुल खेडाखुर्द दिल्ली का उत्सव

गुरूकुल खेडाखुर्द दिल्ली–110082 का वार्षिकोत्सव रविवार, 8 अप्रैल 2018 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक सोल्लास मनाया जायेगा। इससे पूर्व 29 मार्च से 7 अप्रैल 2018 तक प्रातः 7 से 9 व सायं 5 से 7 बजे तक यज्ञ होगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

–ब्रह्मप्रकाश मान, प्रधान –मनोज मान,मन्त्री –आचार्य सुधांशु, प्राचार्य

बहरोड़ में महर्षि दयानन्द योगधाम का उद्घाटन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य रामकृष्ण शास्त्री के कुशल नेतृत्व में बहरोड़,(जिला–अलवर) में मंगलवार, 20 मार्च 2018 को प्रातः 9 से 1 बजे तक महर्षि दयानन्द योगधाम आश्रम का शुभारम्भ होने जा रहा है। उद्घाटन समारोह में स्वामी आर्यवेश जी,डा.अनिल आर्य जी मुख्य अतिथि के रूप में पहुंच रहे हैं। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

उड़ीसा में युवक निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में "प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर" दिनांक 5 मई से 11 मई 2018 तक गुरुकुल संस्कृत विद्यालय, राउरकेला–4, ओडिशा में लगेगा।

सम्पर्क करें– पं. धनेश्वर बेहरा, प्रान्तीय अध्यक्ष–9438441227

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970